विचार बिन्दु

चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा उसकी छाया। –अब्राहम लिंकन

ऐसा हो 2025 का भारत

2024 बीत गया है और हम ने 2025 में प्रवेश कर लिया है । वर्ष 2024 में भारत ने लोकसभा और कुछ विधानसभाओं के चुनाव देखे, जिनमें अनेक बार भाषा की मर्यादाएं तार-तार हुईं और राजनीति का स्तर निम्न से निम्नतर होता गया। सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों की ओर से संविधान की रक्षा की बात की गई और दोनों ने इसकी भावना के विपरीत काम किया ।

इस संदर्भ में 2025 के भारत की कल्पना हम करें, तो मेरे मन में जिस प्रकार की तस्वीर उभरती है, उसका उल्लेख इस लेख में किया गया है।

सबसे पहली कामना तो यही है कि सार्वजनिक जीवन में शुचिता और मर्यादा पुनर्स्थापित हो। अयोध्या में क्योंकि मर्यादा पुरुषोत्तम राम का भव्य मंदिर बन चुका है, अत: राजनीतिज्ञ मर्यादित व्यवहार करें। संसद में नियमित उच्च कोटि की बहस हो। विचारों की असहमति व्यक्त करने हेतु कड़े शब्दों का प्रयोग हो, किंतु उनमें ओछापन न हो। आम जन के मुद्दों जैसे–बेरोजगारी, महंगाई सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर ही सर्वाधिक चर्चा हो। जन और प्रतिनिधि के बीच में दूरी कम हो और उनका सारा काम केवल जन हित में ही हो। कानून ऐसे हों जो देशवासियों को अपनी असीमित क्षमता का प्रदर्शन करने का पूर्ण अवसर प्रदान करें । राजनीतिज्ञ, दूसरे दलों के नेताओं के प्रति सम्मान रखें और मर्यादा पूर्ण भाषा का प्रयोग करें। धर्म को राजनीति का हथियार न बनाएं, ऐसी कामना इस वर्ष के लिए की जा सकती है। ऐसा करने में योगदान किसी एक दल का नहीं, अपितु सभी राजनीतिक दलों का हो।

2025 में देश में असमानता कम हो। गत कुछ वर्षों में गरीब और अमीर की खाई बहुत बढ़ी है और संपत्ति का केंद्रीकरण कुछ लोगों के हाथ में हुआ है । यह वर्ष ऐसा हो, जिसमें वंचित वर्ग के लोगों को भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का और अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो। प्रतिभा किसी विशेष वर्ग की बपौती नहीं है एवं समाज के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक स्तर में प्रतिभा भरपूर छिपी हुई है। इस वर्ष में उनकी प्रतिभा को निखरने का पूरा अवसर मिले। यह अपेक्षा है कि गुणवत्ता पूर्ण पढ़ाई के अवसरों में समानता हो। निर्धनतम परिवार का बच्चा भी अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी हो ।जब शिक्षा का अवसर समान होगा, तब अपनी प्रतिभा के अनुसार आगे बढ़ने का स्वत: ही अवसर प्राप्त हो जाएगा ।इस वर्ष में सरकार, शिक्षा की पूरी जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर ले। इसके लिए धन के अभाव का बहाना न बनाया जाए। कम से कम, स्कूली शिक्षा तक तो ऐसा हो ही। शिक्षा संस्थान, व्यवसाय के साधन बन कर न रह जाएं अपितु बच्चों के भविष्य का निर्माण करने का माध्यम बनें । सरकार, संविधान में उल्लेखित कर्तव्य को निभाते हुए सभी बालक-बालिकाओं को एक समान उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करे।

कार्यपालिका से यह अपेक्षा है कि वह ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा और संवेदनशीलता के साथ कानून का राज स्थापित करे । वे संविधान एवं आमजन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए काम करें ताकि वे लोगों की दुआएं ले सकें। सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं होती है। कार्यपालिका में काम करने वाले सभी लोग, स्वयं को उस धन का ट्रस्टी समझते हुए, उसका अधिकाधिक लाभ सर्वाधिक वंचित वर्ग तक पहुंचाने का काम करें, यह आशा हम 2025 में कर सकते हैं । सरकारी कार्यालय में नागरिकों को बार-बार चक्कर न लगाने पड़ें। सारे नियम और प्रक्रियाएं बहुत सहज, सरल, स्पष्ट भाषा में उपलब्ध हों । कार्यपालिका का एक ही ध्येय हो "आमजन के साथ अच्छा व्यवहार तथा उसका तत्पर काम "।

देश में स्वार्थ का भाव समाप्त हो। सभी नागरिक एक दूसरे के साथ सहयोगी की तरह, कंधे से कंधा मिलाकर देश को आगे बढ़ाने के काम में जुट जाएं । नागरिकों को भी इस नव वर्ष में संकल्प लेना होगा कि वह बिना सोचे-समझे सोशल मीडिया पर ऐसा कोई संदेश आगे नहीं भेजेंगे जिससे समाज में परस्पर कटुता, हिंसा और नफरत का वातावरण उत्पन्न होता हो। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पूर्ण रूप से हो, किंतु यह संयम सभी बरतें कि वे ऐसी कोई बात न कहें, न करें जिससे समाज में अलगाव और असहिष्णुता की स्थिति उत्पन्न हो।

सभी संवैधानिक संस्थाएं पूर्ण रूप से स्वतंत्र एवं निष्पक्षता के साथ अपना काम करें, ऐसा वातावरण हो । सरकार को संयम बरतना होगा कि वह विभिन्न संवैधानिक संस्थाओं जैसे चुनाव आयोग, न्यायपालिका, सीबीआई, ई डी आदि का दुरूपयोग अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए न करे।

वर्ष 2025 में देशभक्ति की एक नई परिभाषा गढ़ी जाए जिसका सीधा, सरल अर्थ यह हो कि जो जिस काम में संलग्न है, उसे पूरी ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा के साथ संपन्न करे। यह बात लोकतंत्र के चारों स्तंभों पर लागू होती है ।

2025 में मीडिया, सकारात्मक खबरों को बिना किसी लाग लपेट के लोगों तक पहुंचाए। देश के विभिन्न भागों में अनेक व्यक्ति बहुत उत्कृष्ट श्रेणी का कार्य, जनहित में कर रहे हैं। ऐसे कार्यों को देश के अन्य लोगों तक फैलाने का काम मीडिया करे । वे केवल राजनीति पर पूरा ध्यान केंद्रित करने के बजाय सामाजिक सद्भाव और सौहार्द्र को बढ़ाने वाले तथा देश को प्रगति के पद पर तेजी से बढ़ाने वाले कामों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करें।

2025 में मीडिया, सकारात्मक खबरों को बिना किसी लाग लपेट के लोगों तक पहुंचाए। देश के विभिन्न भागों में अनेक व्यक्ति बहुत उत्कृष्ट श्रेणी का कार्य, जनहित में कर रहे हैं। ऐसे कार्यों को देश के अन्य लोगों तक फैलाने का काम मीडिया करे । वे केवल राजनीति पर पूरा ध्यान केंद्रित करने के बजाय सामाजिक सद्भाव और सौहार्द्र को बढ़ाने वाले तथा देश को प्रगति के पद पर तेजी से बढ़ाने वाले कामों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करें ।

2025 में नवाचार और सृजनशीलता को प्रोत्साहन मिले, वैज्ञानिक सोच विकसित हो और अंधविश्वास का उन्मूलन हो। अंधविश्वास के नाम पर महिलाओं का उत्पीड़न रुके और देश में बाल मजदूरी समाप्त हो । कहीं किसी ढाबे, ईंट भट्टे, किसी के घर में काम करते हुए या सड़क पर कचरा बिनते हुए बच्चे नहीं दिखाई दें ।

भारत आर्थिक शक्ति बने और संपन्न हो, यह सभी की कामना है किंतु उस प्रगति का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचे, यह अधिक आवश्यक है । ऐसी अपेक्षा 2025 में की जा सकती है कि देश के सभी नागरिक देश की संपन्नता में हिस्सेदार बनें ।

सभी व्यापारी, बिना कर चोरी के, अपना व्यवसाय करें। वह संपन्न बनें, किंतु विधि सम्मत तरीके से। यदि कोई कानून और प्रक्रिया किसी भी प्रकार के व्यवसाय करने में बाधा उत्पन्न करती है तो उन बाधाओं को भी दूर किया जाए ताकि मजबूरन किसी भी व्यवसाई को गैर कानूनी रास्ता न अपनाना पड़े।

न्यायपालिका से अपेक्षा है कि वह त्वरित गति से हर व्यक्ति को न्याय प्रदान करे। हालांकि सुप्रीम कोर्ट में न्याय की देवी की आंखों पर से पट्टी हटा ली गई है, किंतु इसका अर्थ यह न हो जाए कि कानून, व्यक्ति की हैसियत देखकर निर्णय करे । सभी वर्ग और सभी व्यक्तियों के लिए कानून का समान रूप से प्रयोग हो, यह सुनिश्चित करना ही होगा। विलंबित न्याय, अन्याय के समान है। न्यायपालिका को यह बात अच्छी तरह समझनी होगी कि दशकों तक प्रकरण लंबित रहे तो न्याय न मिलने के बराबर है। यह सुनिश्चित करने के लिए जो भी प्रक्रियागत परिवर्तन आवश्यक हों, वे इस वर्ष हों, ऐसी आशा है। अंग्रेजों के जमाने के बहुत सारे कानून हैं जो देश के नागरिकों की स्वतंत्रता को बाधित करते हैं और उन्हें मूल अधिकार से वंचित करते हैं। उनके बारे में विचार कर उन्हें जनोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है।

2025 में हम ऐसा भारत चाहते हैं जहां कोई भी बालिका या महिला निश्चिंत होकर, किसी भी समय किसी भी स्थान पर अकेली जा सके।

जनता को 2025 में देश में अधिक स्वच्छ और प्रदूषण रहित पर्यावरण मिले, मिलावट रहित खाद्य सामग्री मिले, यह कामना है। इसके लिए जहां नागरिकों को अपने कर्तव्य का निर्वहन करना होगा, वहीं सरकारों को पहल करनी होगी। गुणवत्ता पूर्ण स्वास्थ्य सेवा न केवल उपलब्ध हो अपितु सबकी पहुंच में हो।

वर्ष 2025 में सरकार प्रमुख रूप से पूरा ध्यान शिक्षा और स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर ही केंद्रित करे। अन्य क्षेत्रों के लिए केवल एक अच्छे नियामक की भूमिका निभाए ताकि निजी क्षेत्र भी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ आगे बढ़ सके ।

प्रधानमंत्रीजी 'न्यू इंडिया' की बात करते हैं। मैं 'नव भारत' की बात करूंगा। मेरी दृष्टि में 2025 का 'नव भारत' ऐसा होना चाहिए जहां सब भारतीय प्रसन्न हों, संतुष्ट हों, देशभक्त हों और सब अपनी क्षमता और प्रतिभा के अनुसार स्वयं का और देश का विकास करने में संलग्न हों, सरकार अपनी प्राथमिकता को पुन: परिभाषित करते हुए आम लोगों के लिए काम करे, भारत आर्थिक शक्ति बने तो प्रत्येक भारतीय भी आर्थिक रूप से संपन्न हो ताकि अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, भारत न केवल चांद पर पहुंचे एवं अंतरिक्ष विज्ञान में अपना झंडा फहराए, अपितु प्रत्येक भारतीय बालक-बालिका को उच्च स्तरीय स्कूली शिक्षा मिले, भारत न केवल दवाई का निर्यात करने वाला प्रमुख देश बने, कोई भी भारतीय दवाओं के अभाव में न मरे, भारत न केवल विभिन्न खाद्यान्नों एवं फलों का निर्यातक बने, कोई भी भारतीय कुपोषित न रहे, भारत बाल मजदूरी, बाल विवाह, बलात्कार और महिला असुरक्षा की राजधानी के रूप में कुख्यात न हो अपितु स्वस्थ बच्चों और सुरक्षित महिलाओं के देश के रूप में जाना जाए, भारत आपसी कटुता, धर्मांधता एवं अंधविश्वास के लिए न जाना जाए अपितु परस्पर सौहार्द्र, प्रेम, भाईचारे और वैज्ञानिक सोच के लिए जाना जाय। जब ऐसा भारत होगा, तभी हम विश्व गुरु कहलाने के वास्तविक अधिकारी होंगे ।

कई पाठकों को उपरोक्त बातें बड़ी काल्पनिक लग सकती हैं, किंतु मैं एक घोर आशावादी व्यक्ति हूं और मुझे भारतीयों की क्षमता और प्रतिभा में पूरा विश्वास है। 2025 का वर्ष, सबको अवसर देने का वर्ष बने, यही कामना है। यदि हम ऐसा कर सके तो यह सपना नहीं, सच्चाई होगी।

सभी पाठकों को नव वर्ष की अनेकानेक शुभकामनाएं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

"वन नेशन, वन एजुकेशन" सिलबस

सुनील दत्त गोयल

राज्य और केंद्र सरकारों की शिक्षा नीति "वन इंडिया, वन एजुकेशन" होनी चाहिए। जिस तरह केंद्रीय विद्यालयों में पूरे भारत में एक ही यूनिफॉर्म/ड्रेस कोड और सिलेबस है, छुट्टियों से लेकर पढ़ाई के समय तक एक समान हैं, उसी मॉडल को पूरे देश के प्राइवेट स्कूलों में भी लागू करना चाहिए। यह पहल न केवल शिक्षा प्रणाली में समानता लाएगी, बल्कि छात्रों के लिए बेहतर अवसरों का द्वार भी खोलेगी।

शिक्षा के उद्देश्य और संसाधनों का बेहतर उपयोग : सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिन स्कूलों को रियायती दरों पर जमीन उपलब्ध कराई गई है, वे उन संसाधनों का उपयोग शिक्षा के उद्देश्यों के लिए कर रहे हैं। हमारा सभी शिक्षण संस्थानों से यह निवेदन है कि वे भूमि और भवन का गैर-शिक्षण कार्यों में उपयोग करने से बचें और उनका अधिकतम उपयोग बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए ही करें। ऐसा करने से सरकार के साथ उनका बेहतर सामंजस्य बना रहेगा। उदाहरण के लिए, कई स्कूलों ने सरकार से मिली जमीन का उपयोग आधुनिक प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और खेल सुविधाओं के निर्माण में किया है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक साबित हुए हैं। हालांकि, ऐसा करने वाले शैक्षिणक संस्थानों की संख्या बहुत कम है। उम्मीद की जाती है कि अन्य शिक्षण संस्थान भी जमीन का उपयोग सरकार से किए गए वायदे के मुताबिक ही करें, जिससे छात्रों के जीवन में सुधार हो और राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो। यदि कुछ जमीन वर्तमान में खाली है, तो उसे बेहतर योजनाओं के तहत उपयोग में लाने के सुझाव दिए जा सकते हैं। इन जमीनों पर वंचित बच्चों के लिए विशेष शैक्षिणक केंद्र या कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। यह न केवल शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करेगा, बल्कि समाज में समावेशी विकास को भी बढ़ावा देगा। स्कूल प्रबंधन और सरकार के बीच सहयोग से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि उपलब्ध संसाधन अधिक छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए उपयोग हों। यह न केवल शिक्षा क्षेत्र को मजबूत करेगा, बल्कि स्कूलों की सकारात्मक छवि भी बनाएगा।

निजी स्कूलों की भूमिका : निजी स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और आधुनिक सुविधाएं प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ निजी स्कूल डिजिटल क्लासरूम, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और विदेशी भाषाओं के अध्ययन के लिए विशेष कार्यक्रम चलाते हैं। ये पहल छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करती हैं। हालांकि, यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी पारदर्शिता हो। स्कूल प्रबंधन को सरकार के साथ मिलकर एक पारदर्शी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षा से संबंधित उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकें। इससे छात्रों और अभिभावकों का विश्वास भी बढ़ेगा।

फीस और पाठ्यपुस्तकों में समानता : फीस और पाठ्य पुस्तकों की कीमतों में संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार और स्कूल प्रबंधन को एक पारदर्शी प्रणाली लागू करनी चाहिए। केंद्रीय विद्यालय की तरह, निजी स्कूलों में भी एक ही सिलेबस और पूरे भारत में एक समान शुल्क लागू किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जरूरतमंद छात्रों को किताबें और अन्य शैक्षिणक सामठी कम या बिना शुल्क के उपलब्ध कराने के लिए सरकार और निजी स्कूल मिलकर एक तंत्र विकसित कर सकते हैं। यह कदम शिक्षा के अधिकार को सशक्त करेगा।

व्यापार एवं उद्योग जगत और विद्यार्थियों को लाभ : "वन नेशन, वन एजुकेशन" नीति का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि विद्यार्थी पूरे देश में समान स्तर की शिक्षा प्राप्त करेंगे। इससे व्यापार और उद्योग जगत को भी फायदा होगा, क्योंकि नौकरी के लिए आवेदन करने वाले सभी छात्रों का शैक्षिणक स्तर समान होगा। रोजगार उपलब्ध करवाने वाले व्यापार एवं उद्योग जगत के मानव संसाधन विभाग को यह विश्वास होगा कि सभी राज्यों के छात्र "वन इंडिया, वन एजुकेशन" नीति के तहत समान शैक्षिक मानकों का पालन कर रहे हैं। इससे रोजगार के अवसरों में भी समानता सुनिश्चित होगी और छात्रों को एक समान स्तर पर आंका जाएगा।

सुझाव : सरकार को "वन नेशन, वन एजुकेशन सिलेबस" नीति को लागू करना चाहिए। सभी स्कूलों में एक समान सिलेबस और यूनिफॉर्म लागू होने से शिक्षा प्रणाली अधिक संगठित और समान हो जाएगी। केंद्रीय विद्यालयों की सफलता इस बात का प्रमाण है कि यह मॉडल पूरे देश में लागू किया जा सकता है। इसके अलावा, स्कूल प्रबंधन और सरकार को साथ मिलकर काम करना चाहिए, ताकि शिक्षा का स्तर ऊंचा उठ सके और अधिक छात्रों को लाभ मिल सके। एक समर्पित कमेटी का गठन कर सभी स्कूलों की गतिविधियों की समीक्षा और संसाधनों के उपयोग की निगरानी की जा सकती है।

आज पूरे भारत देश में एक आम धारणा जनता में बन चुकी है कि निजी स्कूल केवल ड्रेस और किताब बेचने का कारोबार में ज्यादा ध्यान देते हैं। इस प्रकार की नकारात्मक छवि से बचने के लिए स्कूलों को भी अपने कार्यप्रणाली में परिवर्तन करने की जरूरत है, जिससे उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो और विद्यार्थियों के परिजन भी उनको और सम्मान की दृष्टि से देखें। ऐसा करने से दोनों ओर से परस्पर सामंजस्य स्थापित होगा और एक दूसरे के प्रति विश्वास और सम्मान भी बढ़ेगा। हमारा अनुरोध है कि निजी स्कूल राष्ट्र निर्माण के लिए अपना योगदान दें। सरकार द्वारा रियायती दरों पर जमीन उपलब्ध कराए जाने के बाद यह उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वे छात्रों को उच्चतम स्तर की शिक्षा प्रदान करें और उन्हें वास्तविक जीवन के लिए तैयार करें। इस दृष्टिकोण से, स्कूल प्रबंधन और सरकार के बीच सहयोग मजबूत होगा, शिक्षा का उद्देश्य प्रभावी ढंग से पूरा होगा, और समाज के सभी वर्गों के छात्रों को समान अवसर प्रदान किए जा सकेंगे। यह कदम एक उज्जवल और समावेशी भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

धन्यवाद,

सुनील दत्त गोयल
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
जयपुर, राजस्थान।

सूफी संत ख्वाजा का 813वां उर्स : अंतिम शाही महफिल व गुस्ल की रस्म अदा

छोटे कुल की रस्म आज, बंद होगा जन्नती दरवाजा, केवड़े व गुलाब जल से दरगाह को धोया

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 813वें सालाना उर्स के मौके पर दरगाह में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। लाखों की संख्या में जायरीन ने दरगाह जियारत की, जिसके चलते दरगाह परिसर सहित परिधि क्षेत्र में जायरीन की भीड़ देखने को मिली। एक दिन पहले ही सोमवार को जायरीन ने गुलाब जल व केवड़े से दरगाह को धोया। मंगलवार को कुल की रस्म होगी, इसके साथ ही छह दिन से आम जायरीन के लिए खोला गया जन्नती दरवाजा बंद कर दिया जाएगा। दरगाह की खिदमत का समय भी बदल जाएगा।

उर्स में शरीक होने आए जायरीन ने सोमवार देर शाम से ही केवड़े और गुलाब जल से दरगाह को धोना शुरू कर दिया है, जबकि दरगाह में छठी पर मंगलवार को कुल की रस्म होगी। दरगाह की दीवारों पर केवड़े और गुलाब जल का छिड़काव करने के बाद जायरीन दीवारों से टपकते पानी को बोतलों में भरकर साथ ले गए। उर्स के मौके पर जायरीन कई साधनों से अजमेर आते हैं। इनमें बड़ी संख्या में ट्रेन से सफर कर आने वाले होते हैं। ऐसे में उन जायरीन को वापस भी लौटना होता है जो छठी को छोटे कुल की रस्म तक नहीं रुक पाते हैं। वह एक दिन पहले ही दरगाह को केवड़ी और गुलाब जल से धोना शुरू कर देते हैं।

महफिलखाना में दरगाह दीवान सैयद जैनुल आबेदीन की सदारत उर्स की छठी शाही महफिल और ख्वाजा साहब की मजार को छठा गुस्ल अदा किया गया। मंगलवार दोपहर को कुल की रस्म के साथ छह दिनों से खुला जन्नती दरवाजा बंद कर दिया जाएगा और उर्स का झंडा चढ़ने के साथ खिदमत का समय भी बदल जाएगा। उर्स के दौरान 10 जनवरी को जुमे की नमाज होगी। दरगाह की शाहजहांनी, अकबरी, संदली मस्जिद सहित आसपास के इलाकों में जायरीन नमाज अदा करेंगे।

मेवाड़ में स्ट्रॉबेरी की हो रही खेती, दूर-दूर से देखने आ रहे हैं लोग

बैंकिंग क्षेत्र के नारायण सिंह और आरएनटी में प्रोफेसर मेडिसिन डॉ. महेश दवे ने मिलकर स्ट्रॉबेरी की खेती का सपना साकार किया

राजसमंद, (निसं)। जिले के घोड़च ग्राम पंचायत के गांव कुंडा में डॉ. महेश दवे और नारायण सिंह ने एक ऐसा काम कर दिखाया है जो कभी असंभव माना जाता था। इन्होंने मेवाड़ की धरा पर स्ट्रॉबेरी की खेती करके न केवल अपना सपना पूरा किया है, बल्कि मेवाड़ के किसानों के लिए एक प्रेरणा भी बन गए हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में काम करने वाले नारायण सिंह ने खेती के नए आयाम तलाशने का निर्णय लिया। उन्होंने स्ट्रॉबेरी की खेती का विचार किया और इसके लिए रिसर्च शुरू की। उन्हें पता चला कि स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए 15-20 डिग्री सेल्सियस तापमान और खास वातावरण चाहिए। उन्होंने महाबलेश्वर, हिमाचल और अन्य जगहों का दौरा किया और समझा कि यह एक संवेदनशील फसल है, लेकिन मेहनत से इसे सफल बनाया जा सकता है। अपने शोध के दौरान, नारायण सिंह की मुलाकात आरएनटी मेडिकल कॉलेज, उदयपुर में प्रोफेसर मेडिसिन डॉ. महेश दवे से हुई। डॉ. दवे की भी खेती में गहरी रुचि थी। जिले के कुंडा गांव में उनके पास खाली जमीन और फार्महाउस था।

उन्होंने साथ मिलकर वहां 65 हजार वर्ग फीट क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू करने का निर्णय लिया। नारायण सिंह ने डॉ. महेश दवे के सहयोग से स्ट्रॉबेरी की बुवाई अक्टूबर में की। इसके लिए ऑर्गेनिक खाद, नीम की खली, और छाया के लिए मल्च का उपयोग किया गया। मधुमक्खियों की मदद से पौधों का परागण (पोलिनेशन) कराया गया, जिससे फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि हुई। दो महीने बाद दिसंबर में ही खेतों में भरपूर स्ट्रॉबेरी तैयार हो गई। अब फसल की इतनी मांग है कि ऑर्डर पूरे करना मुश्किल हो रहा है। बड़े सुपर मार्केट, वरिष्ठ अधिकारी और उद्योगपति इनकी स्ट्रॉबेरी खरीदने के लिए पहुंच रहे हैं। मंडी में भी एक दिन छोड़कर एक दिन उत्पादन भेज रहे हैं।

कुंडा ग्राम में स्ट्रॉबेरी के खेत में कृषक और अन्य लोग।

- **65 हजार वर्ग फीट में हुई फसल, दो माह में ही उग आई स्ट्रॉबेरी, एक फसल से आठ लाख के लाभ का अनुमान**

अब तक इस परियोजना में 8 लाख की लागत आई है और 2 लाख रुपए की कमाई हो चुकी है। फसल पूरी होने तक अनुमान है कि कुल 16 लाख रुपए की कमाई होगी, जिससे एक ही फसल में 8 लाख रुपए का शुद्ध लाभ होगा। डॉ. महेश दवे और नारायण सिंह न केवल खुद सफल हो रहे हैं, बल्कि अन्य किसानों को भी नई फसलें उगाने और अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उनकी यह यात्रा साबित करती है कि अगर ठान लिया जाए तो कुछ भी असंभव नहीं।

नारायण सिंह मूलत: मावली के आसलियों की मादड़ी के निवासी है जो यहां से 45 किमी दूर है। जुनून ऐसा है कि वे लगभग हर रोज इतना सफर तय कर यहां खेत पर पहुंचते है। वे कहते हैं कि अब यही उनकी नई दुनिया है। स्ट्रॉबेरी की खेती कोई आसान काम नहीं है, बल्कि यह निरंतर ध्यान और मेहनत की मांग करती है। इसका छोटे बच्चे की भांति ध्यान रखना पड़ता है। नारायण सिंह और डॉ. महेश दवे बताते हैं कि इस फसल के रखरखाव के लिए चार व्यक्तियों की एक टीम हर समय तैनात रहती है। सुबह 4 बजे से ही सिंचाई और पौधों की देखभाल शुरू हो जाती है। स्ट्रॉबेरी की संवेदनशील प्रकृति के कारण पौधों की नमी, पोषण और तापमान पर निरंतर ध्यान देना पड़ता है। इसके अलावा, फसल की गुणवत्तापूर्ण पैदावार सुनिश्चित करने के लिए जैविक खाद, छाया जाल, और मधुमक्खियों द्वारा पोलिनेशन जैसे विशेष उपाय किए जाते हैं। कुल चार व्यक्तियों की टीम रोज यहां काम करती है।

स्ट्रॉबेरी की उच्च कीमत और संवेदनशीलता इसे विशेष ध्यान देने योग्य बनाती है। शाम को खरीदारों की आमद के बाद भी, रात भर फसल की रखवाली करनी पड़ती है। यह काम जानवरों और पक्षियों से फसल की सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है। किसानों को अतिरिक्त सतर्कता बरतनी पड़ती है ताकि फसल को किसी भी प्रकार का नुकसान न हो। नारायण सिंह और डॉ. महेश दवे की यह मेहनत और समर्पण इस बात का प्रतीक है कि नई और चुनौतीपूर्ण फसलें उगाने के लिए प्रतिबद्धता और टीमवर्क कितने आवश्यक हैं। भारत में "चैंडलर", "कैमारोसा", और "साबरगम" जैसी किस्में अधिक लोकप्रिय हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 7 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, रेवती नक्षत्र सायं 5:50 तक, शिव योग रात्रि 11:15 तक, बव करण सायं 4:27 तक, चन्द्रमा सायं 5:50 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग सायं 5:50 से सूर्योदय तक है। रवियोग सायं 5:50 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी है। पंचक सायं 5:50 तक रहेंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:57 से 11:15 तक, लाभ-अमृत 11:15 से 1:51 तक, शुभ 3:04 से 4:27 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:45

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बढ़ सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को तनाव से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी अनबन हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।